प्रातः क्लास पिता श्री ओमशान्ति 2-1-67

रिकार्डः- दूर देश का रहने वाला:- ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। भारत खास और दुनिया आम सभी विश्व में शान्ति चाहते हैं। अब यह तो समझना चाहिए जरूर विश्व का मालिक ही विश्व में शान्ति स्थापन कर सकता है। गाड फादर को ही पुकारना चाहिए कि आकर विश्व में शान्ति फैलाओ। किसको पुकारें वह भी बिचारों को पता नहीं। सारे विश्व की बात है ना। विश्व में शान्ति चाहते हैं। अब शान्ति का धाम तो अलग है। जहाँ बाप और आत्मायें रहती हैं। यह भी बेहद का धाम ही समझाते हैं। विश्व सारी दुनिया को कहा जाता है। अब इस दुनिया में ढेर के ढेर मनुष्य हैं। अनेक धर्म हैं। कहते हैं एक धर्म हो जाये तो शान्ति हो जाये। सभी धर्म मिल कर एक हो नहीं सकते। त्रिमूर्ति की भी महिमा है। त्रिमूर्ति का चित्र बहुत कर के रखते हैं। यह भी जानते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, किसकी? सिर्फ शान्ति की थोड़े ही होगी। शान्ति और सुख की स्थापना होती है। इस भारत में ही 5000 वर्ष पहले जब इनका राज्य था तो जरूर बाकि सब जीवआत्मायें जीव को छोड़ के छोड़ अपने घर गई होंगी। अब चाहते है एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा हो। अब तुम जानते हो बाप सुख शान्ति सम्पति की स्थापना कर रहे हैं। एक राज्य भी जरूर यहाँ ही होगा। अब एक राज्य स्थापन हो रहा है। यह कोई नई बात नहीं। अनेक बार एक राज्य की स्थापना हुई है फिर अनेक धर्मों की वृधी होते होते झाड़ बड़ा होता जाता है। फिर बाप को आना पड़ता है। अब तुम बच्चे सम्मुख बैठे सुन रहे हो। और बच्चे सुनेंगे। रूहानी बाप से बच्चे सुन रहे हैं। अपन को आत्मा समझना है। आत्मा ही सुनती है। पढ़ती है, आत्मा में संस्कार है। हम आत्मा भिन्न 2 शरीर धारण करती हैं। बच्चों को इस निश्चय बुधि होने में ही बड़ी मेहनत लगती है। कहते हैं बाबा घड़ी 2 भूल जाते हैं। बाप समझाते है यह भूल भूलईया का खेल है। इसमें तुम जैसे फंस गये हो। पता नहीं है हम अपने घर अथवा राजधानी में कैसे जावेंगे। अब बाप ने समझाया है। तुम समझते हो आगे हम कुछ नहीं जानते थे। हम कहाँ से आये हैं कैसे पार्ट बजाते हैं फिर वापस कैसे जावेंगे कुछ भी पता न था। पत्थर बुधि थे। आत्मा कितनी पत्थर बुधि बन जाती है। पत्थर बुधि और पारस बुधि का गायन भारत में ही है। पत्थर बुधि राजायें और पारस बुधि राजायें यहाँ ही हैं। पारसनाथ का मंदिर भी है। अभी तुम समझते हो हम आत्मायें कहाँ से आये हैं। पार्ट बजाने। आगे तो कुछ भी नहीं जानते थे। जैसे जनावर बुधि थे। इनको कहते हैं काँटों का जंगल। यह सारी दुनिया काँटों का जंगल है। फूलों के बगीचे को आग लगे ऐसा कब सुना नहीं। हमेशा जंगल को आग लगती है। बहुत बड़ी आग लगती है। यह भी जंगल है। इनको आग लगनी है जरूर। भंभोर को आग लगनी है। सारी दुनिया को भंभोर कहा जाता है। अभी तुम बच्चों ने बाप को जान लिया है। सम्मुख बैठे हो। तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से पढ़ूँ। वह सब कुछ हो रहा है। भगवानुवाच बच्चों प्रति ही होगा ना। तुम जानते हो भगवान पढ़ाने हैं। निराकार शिव को ही भगवान कहेंगे। शिव की पूजा भी यहाँ होती है। सतयुग में पूजा आद नहीं होती। बाप ने समझाया है यह सब खेल बना हुआ है। उनकी आयु है 5000 वर्ष। तुम समझते हो अब सतयुग की फिर से स्थापना हो रहा है। कलियुग की आयु पूरी होती है तो भी मनुष्य इतना घोर अंधियारे में है समझते नहीं। कह देते कलियुग की आयु तो लाखों वर्ष है। अज्ञान है ही घोर अंधियारा। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। तब ही भक्त भगवान को याद करते हैं। सतयुग त्रेता में भक्ति होती नहीं। याद भी नहीं करते। भक्तों को सतयुगी राजधानी का फल मिलता है। तुम समझते हो हम ने सब से जास्ती भक्ति की है। इस लिए हम ही पहले पहले बाप के पास आये हैं। फिर हम ही राजधानी में आवेंगे। तुम बच्चों को पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। नई दुनिया में उंच पद पानी है। बच्चों की दिल होती है हम जल्दी अपने घर जावेंगे। शुरू में ही नया घर होगा। फिर पुराना होता जावेगा। घर में बच्चों की वृधी होती जावेगी। पुत्र पौत्रे, तरपौत्रे वह तो पुराने ही में आवेंगे। कहेंगे हमारे दादा, परदादा का यह मकान बना हुआ है। पीछे आने वाले भी कहते हैं ...

कहेंगे हमारे दादा ने, परदादा ने का यह मकान बनाया हुआ है। पीछे आने वाले बहुत होते हैं। जितना जोर से पुरुषार्थ करेंगे तो वह पहले नये घर मे जावेंगे। पुरुषार्थ की युक्ति वाम बहुत सहज समझाते हैं। भक्ति में भी पुरुषार्थ करते हैं ना। बहुत भक्ति करने वालो का ही नाम बाला होता है। कई कई भक्तों की स्टैचूस भी निकालते हैं। ज्ञान का माला को तो कोई को पता ही नहीं। पहले है ज्ञान पीछे है भक्ति। यह तुम बच्चों की बुधि है। आधा समय है ज्ञान सतयुग त्रेता, जब तुम बच्चे नालेज फुल बनते हो। टीचर पास तो नालेज है ही। टीचर हमेशा फुल नालेज वाले ही होते हैं। स्टूडेन्ट में नम्बरवार मार्क्स उठाते हैं। टीचर पास तो फुल नालेज है। यह है बेहद का टीचर। तुम हो बेहद के स्टूडेन्ट। तो जरूर नम्बरवार ही पास होंगे। जैसे कल्प पहले हुये हैं। बाप समझाते हैं तुम ने ही 84 जन्म लिये हैं। 84 जन्मों में 84 चित्र आदि होते हैं। पुनर्जन्म तो जरूर लेना ही है ना। जन्म लेते नीचे उतरते आते हो। पहले जरूर सतोप्रधान दुनिया होती है फिर पुरानी तमोप्रधान दुनिया होती जाती है। मनुष्य भी तमोप्रधान होंगे ना। अभी तुम इस सृष्टि चक्र को जाने गये हो। झाड़ भी पहले नया सतोप्रधान होता है। नये पत्ते बहुत अच्छे होते हैं। यह तो बेहद का झाड़ है। ढेर धर्म है। तुम्हारी बुधि अब बेहद में तरफ जावेगी। कितना बड़ा झाड़ है। पहले पहले आदी सनातन देवी देवता धर्म ही होगा। फिर वैराईटी धर्म आवेंगे। तुम ने ही 84 वैराईटी जन्म लिये हैं। वह भी अविनाशी हैं। तुम जानते हो कल्प कल्प हम 84 का चक्र फिरते रहते हैं। 84 के चक्र में हम ही आते हैं। 84 लाख जन्म कोई मनुष्य की आत्मा नहीं लेती है। वह तो वैराईटी जनावर जानवर आदि ढेर हैं। उनकी तो कोई गिनती भी नहीं कर सकते। मनुष्य की आत्मा ने 84 जन्म लिये हैं। तो भी पार्ट बजाते बजाते एकदम जैसे कि थक गये हैं। दुःखी बन गये हो। सीढ़ी उतरते सतोप्रधान से एकदम तमोप्रधान बन गये हो। बाप फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं तमोप्रधान शरीर, तमोप्रधान दुनिया में आता हूं। अभी सारी दुनिया तमोप्रधान दुनिया है। मनुष्य तो ऐसे ही सिंपल कह देते हैं सारी विश्व में शान्ति कैसे हो। समझते नहीं हैं कि विश्व में शान्ति कब थी। बाप कहते हैं तुम्हारे घर में तो चित्र रखे हैं ना। इनका (ल०ना०) राज्य था। तो सारे विश्व में शान्ति थी। उनको स्वर्ग कहा जाता था। नई दुनिया को ही हेविन गोल्डेन एज कहा जाता है। अभी यह पुरानी दुनिया बदलती है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। विश्व में राज्य तो इनका ही था। लक्ष्मी नारायण के मंदिर में बहुत मनुष्य जाते हैं। यह थोड़े ही किसकी बुधि में है कि यह भारत के मालिक थे। इनके राज्य में जरूर सुख शान्ति होगा। 5000 वर्ष की बात है। जब इनका राज्य था। 5000 वर्ष का ही यह चक्र है। आधा कल्प के बाद पुरानी दुनिया कहा जाता है। इसलिए धर्मवाले लोग स्वस्तिका रखते हैं। चौरासी चौपड़ी में। इनका भी राज है ना। वह तो गणेश कह देते हैं। गणेश को देवता समझते हैं। अब वह कोई देखा है थोड़े ही। 4 भाग पैर दिखाते हैं। अब बाप बच्चों को समझाते हैं अपने को आत्मा समझ सुन रहे हो। आत्मा समझ सुनेंगे तो खुशी भी रहेंगी। बाप हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच भी है ना। एक भगवान तो एक ही होता है निराकार। जरूर वह आकर शरीर लेता होगा तब भगवानुवाच कहा जाता है। यह भी किसको पता नहीं है तब तो नेती नेती करते हैं। कहते हैं वह परम पिता है। फिर कह देते हम नहीं जानते। कहते हैं शिव बाबा। ब्रह्मा को भी बाबा कहते हैं। विष्णु को कब बाबा कहते सुना? प्रजापिता तो बाबा ठहरा ना। तुम हो ब्रह्मा कुमार्यां। प्रजापिता नाम न होने से समझते नहीं हैं। इतने ढेर ब्रह्माकुमारियां हैं तो जरूर प्रजापिता ही होगा। इसलिए प्रजापिता अक्षर जरूर डालो। तो समझेंगे प्रजापिता तो हमारा भी बाप ठहरा। नई सृष्टि जब प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही रची जाती है। हम आत्मायें भाई2 हैं। फिर शरीर धारण कर भाई बहन बनते हैं। बाप के बच्चे तो अविनाशी ही हैं। फिर साकारी बहन भाई चाहिए। तो नाम है तो नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। परन्तु ब्रह्मा को कोई हम याद नहीं करते। याद लौकिक को करते

और फिर पारलौकिक को करते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को याद नहीं करते। दुःख में सुमिरण बाप को करते हैं। ब्रह्मा को नहीं। कहेंगे हे भगवान। हे ब्रह्मा नहीं कहेंगे। सुख में तो किसको भी याद नहीं करते। वहाँ सुख ही सुख है। यह भी किसको पता नहीं। तुम जानते हो इस समय है तीन बाप। भक्ति मार्ग में लौकिक पारलौकिक बाप को याद करते हैं। सतयुग में सिर्फ लौकिक बाप को याद करते हैं। संगम पर तीनों बाप को याद करते हो। लौकिक भी है। परन्तु जानते हैं वह है हद का बाप। उन से हद का वर्सा मिलता है। अभी हमको बेहद का बाप मिला है। जिस से बेहद का वर्सा मिलता है। यह समझ की बात है। अभी बेहद का बाप आये है ब्रह्मा के तन में हम बच्चों को बेहद का सुख देने। उनका बनने से हम बेहद का वर्सा पाते हैं। यह जैसे डाडे का वर्सा मिलता है। वह कहते हैं वर्सा तुमको मैं देता हूँ। पढ़ाता मैं हूँ। ज्ञान मेरे पास है। बाकि न मनुष्यों में ज्ञान है, न देवताओं में ज्ञान है। मेरे ज्ञान है जो मैं बच्चों को देता हूँ। यह है रूहानी ज्ञान। तुम जानते हो रूहानी बाप द्वारा हमको यह पद मिल रहा है। ऐसे विचार सागर मंथन करना है। यह यह प्वाइन्ट्स हम कैसे लिखें जो मनुष्य समझे कि बरोबर परम पिता परमात्मा फिर से भारतवासियों को स्वर्ग बनाते हैं। स्वर्ग का राज्य देते हैं। राज्य था तो सही ना। कब था, इतनी सहज बात भी सभी भूल गये हैं। तुम ने ही राज्य पाया था। अब गंवाया है। गायन भी है मन ते जीते जीत है, मन ते हारे हार। वास्तव में कहना चाहिए माया पर जीत क्योंकि मन को तो जीतना नहीं है। मनुष्य कहते हैं मन की शान्ति कैसे हो। बाप कहते हैं कि आत्मा कैसे कहेंगी कि मन की शान्ति हो। आत्मा तो है ही शान्ति धाम मे रहने वाली। आत्मा जब शरीर में आती है तब कर्म करने लगती है। बाप कहते हैं तुम स्वधर्म में टिको। अपन को आत्मा समझो। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्ति। जब यह आरगन्स मिलती है तब ही आत्मा कर्म करती है। बाकि शान्ति कहां से ढूंढेंगे। इस पर रानी का भी मिसाल देते हैं। हार गले में पड़ा है और ढूंढते थे बाहर। सन्यासी दृष्टान्त देते हैं और फिर खुद जंगल में जाये शान्ति ढूंढते हैं। बाप कहते हैं तुम आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है। शान्ति धाम तुम्हारा घर है। जहां से पार्ट बजाने तुम आते हो। शरीर से फिर कर्म करना पड़ता है। शरीर से अलग होने से फिर सन्नाटा हो जाता है। आत्मा ने जाये दूसरा शरीर लिया। फिर चिंता क्यों करनी चाहिए वापस थोड़ेही आवेंगे। परन्तु मोह सताता है। वहाँ तुमको मोह नहीं सतावेंगा। वहाँ 5 विकार होते नहीं। रावण राज्य ही नहीं। वह है राम राज्य। हमेशा रावण राज्य हो तो फिर मनुष्य थक जाये। कब सुख देख न सके। अभी तुम आस्तिक बने हो। और त्रिकालदर्शी भी बने हो। मनुष्य बाप को नहीं जानते इसलिए नास्तिक कहा जाता है। भक्ति मार्ग में मनुष्य बहुत विकारी बन जाते हैं। इसलिए उन्हों को रोचक बातें सुनाने लिए फिर गरूड़ पुराण में लिखा है। है कुछ भी नहीं। आजकल गरूड़ पुराण कम सुनाते हैं। आगे बहुत सुनाते थे। तो मनुष्यों को डर रहे। अभी तुम समझते हो इस समय के मनुष्य मात्र बिच्छू टिन्डन बन पड़े हैं। जो एक दो को डसते रहते हैं। इसलिए सन्यासी तो भाग जाते हैं। सन्यासी हैं हठ योगी। वह कब राजयोग सिखलाये न सके। जो अच्छे बुजुर्ग है वह सन्यासीयों को भी समझाये सकते हैं। कि तुम राजयोग सिखलाये नहीं सकते। तुम्हारा धर्म ही बाद में स्थापन होता है। हठयोग और राजयोग में रात दिन का फर्क है। वह हठयोगी हैं डुबोने वाले। तुमको बाप उपर ले जाने आये हैं। कितना फर्क है। अभी तुम बच्चे जानते हो यह शास्त्र आदि जो भी पास्ट हो चूके हैं यह सब हैं भक्ति मार्ग। अभी तुम हो ज्ञान मार्ग में। बाप तुम बच्चों को कितना प्यार से नयनों पर बिठाये ले जाते हैं। गले का हार बनाये सब को ले जाता हूँ। पुकारते भी सब हैं। जो काम चिता पर बैठ काले हो गये हैं उनको ज्ञान चिता पर बिठाये हिसाब किताब चुक्तु कराये वापस ले जाते हैं। अब तुम्हारा काम है पढ़ने से। और बातों में क्यों जाना चाहिए। कैसे मरेगा क्या होगा इन बातों में हम क्यों जावें। यह तो क्यामत का समय है। सभी हिसाब किताब चुक्तू कर वापस चले जावेंगे

चुक्त कर वापस चले जायेंगे। यह बेहद का ड्रामा का राज़ तुम बच्चों की ही बुधि में है। और कोई नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा के पास आये हैं। कल्प कल्प आते हैं। बेहद के बाप से वर्सा लेने। हम जीव की आत्माएं आई हैं। बाबा ने भी आकर जीव में प्रवेश किया है। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूं। इनको भी बैठ समझाता हूं। कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अब तुम जानते हो कैसे बाप ने प्रवेश किया है। और कोई भी ऐसे कह न सके कि बच्चों आत्म अभिमानी होकर बैठो। बाप को याद करो। यह महाभारत लड़ाई भी वही है अनेक धर्म भी है। सब पतित बन गये है। अब फिर बाप पावन बनने की युक्ति बताते है। तुम से कोई पूछे कि तुम शास्त्रों को मानते हो बोलो एक है ज्ञान दूसरी है भक्ति। यह शास्त्र आद सब भक्ति मार्ग के है। ये शास्त्र आद तो सब जन्म जन्मान्तर पढ़ते आये है। अब हमको बाप ज्ञान दे रहे है। भक्ति के बाद है ज्ञान। अभी बाप हमको अपना परिचय भी दे रहे है। और सृष्टि के आद मध्य का राज़ भी समझाते है। जिससे हम स्वदर्शन चक्रधारी बन जाते है। आत्मा को सृष्टि के आद मध्य और अन्त का ज्ञान होता है। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला हैं। हम भक्ति को भी मानते हैं। अभी हमको ज्ञान मिल रहा है तो यह भक्ति छूट जाती है। ज्ञान से सदगति होती हैं। भक्ति से दुर्गति होती हैं। ज्ञान को दिन कहा जाता हैं। यह है विकारी दुनिया जहां असुर रहते हैं। वहां है निर्विकारी दुनिया। भारतवासियों को यह भूल ग गया है कि हम ही देवता थे। फिर 84 जन्म ले यहां तक आये पहुंचे हैं। भारत है अविनाशी खन्ड। फिर नई दुनिया होंगी। अब देखो विनाश के लिए कितनी तैयारियों हो रही हैं। विनाश के लिए कितना खर्च करते हैं। खर्च करना चाहिए राजाई पाने लिए। फिर विनाश लिए खर्च कर रहे हैं। क्योंकि तुमको नई दुनिया चाहिए। यह है ही पढ़ाई। है नई दुनिया के लिए। उसको अमरलोक कहा जाता है। और इनको मृत्युलोक कहा जाता हैं। तुम सब पार्वतियां हो। बाप अमरनाथ तुमको अमर बनने लिए अमर कथा सुनाये रहे हैं। भगवानुवाच मैं तुमको मनुष्य से देवता बनाता हूं। मृत्यु लोक से अमरलोक में जाता हूं। वाया शान्ति धाम। तुम बच्चे ही सकते हो बाबा फिर से यह राज्य स्थापन करते हैं। ऐसे और कोई मुख से कह न सके। तुम्हारी यह है एम आबजेक्ट। आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही हैं। इसलिए पहले2 यह चित्र है मुख्य। गीता का भगवान कौन है यह भी सिद्ध करना चाहिए। यह विश्व के मालिक कैसे बने। बाप ने इन्हों को राज्य दिया था। यह भी बच्चे समझते है यह पुल पास हुये हैं। इन्हों के मां बाप कम पास हुये हैं। इसलिए उन्हों का इतना नाम नहीं है। इनका नाम कितना बाला है। फर्स्ट प्रिन्स आफ न्यु वर्ल्ड। अच्छा आज भोग हैं। बच्चों को समझाया है यह भी ड्रामा है। कदम ब कदम जो पास होता है वह ड्रामा। यह पितर आद खिलाना भक्ति मार्ग की रसम भी ड्रामा में नूंध है। सतयुग में पितरों को नहीं बुलाते। वहां तो सदैव सुखी रहते हैं। यहां पितरों को बुलाते हैं फिर उनको खिलाते हैं। यह तो जानते है शरिर बिगर आत्मा कुछ भी स्वीकार नहीं करती। भावना होती हैं शरिर तो खतम हो जाता है। बाकि आत्मा है अविनाशी। बंगाली मछली खाने वाले होंगे तो ब्राह्मण को भी मछली खिलाते हैं। समझते है नहीं तो आत्मा तृप्ती नहीं होंगी। यह सब हैं रसम रिवाज़। भक्ति मार्ग में जो कुछ कर चुके हैं सो ड्रामा अनुसार फिर भी होंगा। इन बातों में मूंझने की दरकार नहीं। ड्रामा में नूंध हैं। इसको मिटाये नहीं सकते। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा अनुसार अपने समय पर हीआता हूं। कल्प कल्प जो पार्ट बजाया हैं वही बजाता हूं। मेरा पार्ट ही पतितों को पावन बनाना। पावन बनने लिए पुरुषार्थ करना है। पुरुषार्थ बिगर कुछ भी नहीं मिलेंगा। अच्छा।

वास्तव में सच्ची दीवाली याद की यात्रा ही है। जिस से आत्मा की ज्योत 21 जन्मो लिए जग जाती है। बहुत बहुत कमाई होती हैं। तुम्हारा नया खाता हैं नई दुनिया के लिए। 21 जन्मों लिए अब खाता जमा करना है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का, आज दीवाली के दिन गुडमार्निंग।